विचार बिन्दु

जो निर्बलों पर दया नहीं करता, उसे बलवानों के अत्याचार सहने पड़ेंगे। –शेख सादी

मुल्क को तबाह करने को आमादा अधिकांश नेता

भारतीय राजनीति में यह चरितार्थ हो रहा है कि नेता वही बनेगा जिसे लन्द-फन्द आता हो, जोड़-तोड़ आता हो। सीधे-साधे, सज्जन और सेवाभावी व्यक्ति अब राजनीति में अपवाद हैं। अब तो वही व्यक्ति राजनीति में आता है जो सत्ता चाहता है या स्वर्ण चाहता है या सुंदरी चाहता है। भारतीय जनता भी इन्हीं नेताओं की अभ्यस्त हो गई है। शायद वह चाहने भी यह लगी है कि भ्रष्ट नेता ही सत्ता में जावें जो भ्रष्ट आचरण कर भ्रष्टाचार बढ़ायें, भ्रष्ट तरीके अपनाने वालों की मदद कर सकें। आज शायद यह कहना भी उचित होगा कि अधिकांश नागरिक स्वार्थी हैं और वे ऐसे लोगों को ही चाहते हैं जिनसे उनके स्वार्थ की पूर्ति हो। भारत का इतिहास साक्षी है कि भारतीय जनता अपने फूट-फजीते से ही दासता की शिकार रही है। कितने अंग्रेज़ आये थे भारत में? एक मुट्ठी भर अंग्रेज़ भारत पर शासन करते रहे। उसी तरह मुट्ठी भर मुगल भी आये और हुकूमत करते रहे।

सैकड़ों वर्षों की दासता ने दास रहना ही सिखा दिया। सुभाष बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर, सुखदेव, खुदीराम जैसे कुछ वीरों के बलिदान से स्वतंत्रता मिली तो 75 वर्षों में फिर विभाजक और दासता प्रेमी तत्व हावी होने लगे हैं। आज देश की जो स्थिति है, उसके लिये कौन ज़िम्मेदार है? क्या छोटे-छोटे अंतराल वाले सत्ताधारी अथवा छ दशक तक सत्ता में रहने वाले? इन्होंने ही भ्रष्टाचार, पक्षपात, परिवारवाद, अन्याय, तुष्टीकरण, जातिवाद आधारित ऐसी राजनीति को पाला पोसा कि आज एक नहीं अनेक भस्मासुर पैदा हो गये हैं और इनमें से कोई एक भस्मासुर सारे देश को लीलने हेतु काफी है।

सभी जानते हैं शिक्षा ही समाज में परिवर्तन लाने का सबसे बड़ा साधन है। आज समाज की जो दुर्दशा है वह लम्बी अवधि की सत्ता की ही देन है। पूछिये उनसे कि उन्होंने भारतीय संस्कृति, सभ्यता को क्यों नष्ट किया?

भारतीय जनता का यह दोष है कि वह भावुकता में क्षमा बहुत जल्दी कर देती है। मेवाड़ के क्षत्रियों ने दुश्मन की स्त्रियों को भी सम्मान दिया, उन्हें सुरक्षित रखा। अजयमेरू के राजा पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को कैद से न छोड़ा होता तो शायद इतिहास ही बदल गया होता। भारतीय जनता बाह्य व्यक्तित्व से जल्दी प्रभावित हो जाती है। गोरी चमड़ी को श्रेष्ठ मान लेती है। इतिहास में यह भूल उसने बार-बार दोहराई है। देश के हों या विदेश के सभी गोरी चमड़ी वालों से प्रभावित होती रही है। हम विश्वास भी जल्दी कर लेते हैं और विश्वासघात के शिकार हो रहे हैं।

मुगलों व अंग्रेज़ों ने 'डिवाइड एन्ड रूल' की नीति अपनाई। हमारे आपसी झगड़े एकता में बाधक बने। जातिवाद का जहर हमें दुर्बल करता रहा। कभी भाषा, कभी धर्म और कभी जाति के नाम पर हमें खूब लड़ाया गया। धर्म के नाम पर नेताओं ने भारत के कई टुकड़े करा दिये। स्वार्थी नेताओं ने धर्म के नाम पर और अपने अहं की पूर्ति हेतु हिंदुस्तान-पाकिस्तान का निर्माण कराया और उसके बावजूद पाकिस्तान में हिंदुओं का वजूद ही खत्म होने के कगार पर है परंतु भारत में रह रहे कुछ अल्पसंख्यक और उनके नेता पुनः उसी राह पर हैं। जब तक उन्हें वर्चस्व प्रदान किया जाता है, उन्हें प्राथमिकता दी जाती है, उन्हें उचित या अनुचित रूप से संतुष्ट रखा जाता है, वे शांत रहते हैं, और जैसे ही सारी भारतीय जनता के साथ न्याय का अब प्रयास किया जाता है, वे विरोध में खड़े हो जाते हैं। उनका और उनके पक्षधर सभी नेता धर्म को मज़हब से जोड़ कर कहने लगते हैं कि धर्म खतरे में है। इसी नीति के कारण विश्व के रंगमंच पर देश के बाद देश और राज्य के बाद राज्य के रंग, स्वरूप, आबादी व मज़हब बदल गये। भारत को भी कटा-फटा कर दिया परंतु यहाँ विराम नहीं लगा, कश्मीर से केरल तक यही प्रक्रिया अभी भी चालू है। पाकिस्तान व चीन के प्रपंच और अन्य अंतर्राष्ट्रीय साज़िशें बदस्तूर चालू हैं, और हम हैं कि अपने नेताओं द्वारा मुल्क की बर्बादी के प्रयासों से अभी भी अनजान हैं।

विपक्ष सबल हो, सशक्त हो, परंतु देश को हानि पहुँचा कर नहीं, तबाही के रास्ते पर ले जाकर नहीं। कर्मफल तो मिलेगा ही, पर उस समय तक देश की काफी हानि हो चुकी होगी, अतः उचित होगा कि अधिकांश नेता जो देश का अहित कर रहे हैं, अभी से सचेत हों और नकारात्मक तथा विध्वंसात्मक राजनीति से बाज़ आयें।

लम्बे समय तक शासन में रहने वाले दल से टूटे, कुछ हेर फेर के साथ समकक्ष व समानान्तर दल एक ही काम कर रहे हैं फूट डालो और राज करो। उनकी राजनीति का आधार व लक्ष्य मात्र एक है कि देश भले ही बिखर जाये पर सत्ता मिल जाये। ऐसे दलों ने हर न्यायपूर्ण कदम का विरोध करना शुरू कर दिया है। समस्त देश व समस्त जनता के प्रति न्याय न हो बस एक वर्ग विशेष ही संतुष्ट रहे, उसकी अन्यायपूर्ण बात भी मानी जाय, यह प्रयास है।

मुल्क को बर्बाद करने के इन प्रयासों पर ज़रा नजर तो डालिये। कश्मीर से धारा 370 हटाने की बात हो या नागरिकता संशोधन अधिनियम, विपक्ष के सभी शीर्ष नेता ये बतायें कि क्या ये निर्णय भारत की जनता और देश के हित में नहीं हैं? क्या सैकड़ों वर्ष के बाद उच्चतम न्यायालय के निर्णय से राम मंदिर का निर्माण और महिलाओं के समान अधिकार देने और उनका शोषण रोकने हेतु तीन तलाक गलत निर्णय है? हज़ारों मंदिरों का विध्वंस कर मस्जिदें बनाने और भारतीय संस्कृति के परिचायक सड़कों व नगरों के नाम बदलना जायज़ था और जनप्रतिनिधियों के बहुमत अथवा न्यायालय के निर्णय से उन्हें पूर्व स्थिति में लाना नाजायज़ क्यों है?

एक देश, एक कानून के लिये कोमन सिविल कोड क्या राष्ट्र विरोधी है? विपक्षी दल विशेष रूप से अल्पसंख्यकों की हिंसात्मक कार्रवाइयों, दंगों, प्रदर्शनों व पत्थरबाजी का समर्थन क्यों करते हैं? ओबेसी भाई, मौलाना, मौलवी, और इमाम हिंदू देवी-देवताओं के बारे में व बहुसंख्यकों के बारे में कुछ भी अनर्गल व भड़काऊ कहें वह वाजिब है, और बहुसंख्यकों में कोई एक-दो व्यक्ति उनके मजहब के बारे में कोई सही व प्रामाणिक बात कह दें तो सारा देश जलाया जाय, क्या यह देश विरोधी कार्रवाई नहीं है, जबकि सरकार व न्यायालय अपना कार्य बाखूबी कर रहे हैं? इन सभी बातों से तो यही लगता है कि विपक्ष और अल्पसंख्यक नेता व धर्मगुरु अल्पसंख्यकों को अपने भाषणों व मदरसों में यह सिखा रहे हैं कि यह देश तुम्हारा नहीं है, शरियत कानून लागू हो तो ही यह देश तुम्हारा है, भारतीय संविधान में और देशहित में उनकी कोई रुचि नहीं है।

हर कानूनी कार्रवाई को राजनीतिक रंग देना, उसका विरोध करना, अल्पसंख्यकों को भड़काना, जातिगत विद्वेष को बढ़ाना ही अधिकांश शीर्ष विपक्षी नेता कर रहे हैं। हाल ही में ई.डी. द्वारा एक शीर्ष नेता को पूछताछ हेतु बुलाने पर जो हंगामा, प्रदर्शन और तथाकथित सत्याग्रह किया गया, उसकी जितनी भर्त्सना की जाय कम है। आश्चर्य तो यह है कि उनके अन्य बड़े-बड़े नेता व मुख्यमंत्री भी चापलूसी का कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। क्या यह प्रजातंत्र की रक्षा हेतु है या एक व्यक्ति की रक्षा हेतु है?

विपक्ष अधिकांशतः परिवारवाद का पोषक बन रहा है, जिसने लोकशाही को खोखला किया है। क्या औचित्य है कि एक दल में एक ही परिवार की पाँच पीढ़ियाँ कुण्डली मार कर सिंहासन पर विराजी रहें? राजस्थान के मुख्यमंत्री एक वरिष्ठ एवं बुज़ुर्ग नेता हैं, आश्चर्य है कि वे भी इस तथाकथित निरर्थक तथा अनावश्यक 'सत्याग्रह' के संभागी हैं। आश्चर्य तो यह है कि नेता लोग जन भावनाओं से खिलवाड़ कर रहे हैं, इससे उन्हें क्या लाभ होगा या हानि यह तो समय बतायेगा। अधिकांश नेता इस मुल्क को अपना मुल्क क्यों नहीं समझते? क्या जातिगत आरक्षण ने इस देश में विषमता पैदा नहीं की? क्या जातिगत जनगणना उसे और नहीं बढ़ायेगी? क्या जनसंख्या नियंत्रण विधेयक आवश्यक नहीं है, जो कई अधिक आबादी वाले देशों में लागू है? जो भी देश का हित चिंतक है वह हैरान है सैन्य सशक्तीकरण के विरोध पर, तथा रफाल व अन्य युद्ध सामग्री की खरीद के विरोध पर। विपक्ष सबल हो, सशक्त हो, परंतु देश को हानि पहुँचा कर नहीं, तबाही के रास्ते पर ले जाकर नहीं। कर्मफल तो मिलेगा ही, पर उस समय तक देश की काफी हानि हो चुकी होगी, अतः उचित होगा कि अधिकांश नेता जो देश का अहित कर रहे हैं, अभी से सचेत हों और नकारात्मक तथा विध्वंसात्मक राजनीति से बाज़ आयें।

कृषि विधेयक, ई.डी. की पूछताछ व अग्निपथ योजना आदि को लेकर भी विपक्ष का जो उग्र प्रदर्शनात्मक व हिंसात्मक रवैया रहा है, वह यह दर्शाता है कि विपक्ष के अधिकांश नेता मुल्क को तबाह करने पर आमाद हैं।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

समाचार चैनलों से दूर होते आम नागरिक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

रॉयटर्स इंस्टीट्यूट की हालिया रिपोर्ट इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाती है कि दुनिया के देशों में लोगों का समाचार चैनलों द्वारा दिखाए जा रहे समाचारों की लोकप्रियता, दर्शनियता और विश्वसनीयता कम होती जा रही है और इस कारण से लोगों को इलेक्ट्रोनिक मीडिया पर दिखाए जाने वाले समाचारों के प्रति रुझान लगातार कम होता जा रहा है। यहां तक होने लगा है कि लोग एक समय जिस तरह से समाचारों को बेसब्री से इंतजार किया करते थे आज कई देशों में तो आधे से अधिक लोग समाचार देखना ही पसंद नहीं करते। लगभग यही स्थिति हमारे देश में होती जा रही है। लोगों का समाचारों के प्रति रुझान लगातार कम होता जा रहा है या यों कहें कि टीवी चैनलों पर लोगों का भरोसा कम होता जा रहा है। इसके कारण भी है। जिस तरह से समाचारों को सनसनी बनाकर प्रस्तुत किया जाता है और जिस तरह से घटनाओं को लेकर बहस होती है उसका स्तर इतना गिर गया है कि लोग देखना ही पसंद नहीं करने लगे हैं।

समाचार चैनलों पर जिस तरह से राई को पहाड़ और बहस के दौरान प्रवक्ताओं द्वारा एक दूसरे पर छींटाकसी की जाती है, एक-दूसरे को नीचा दिखाने के प्रयास होते हैं, जिस तरह से वितण्डा पर आ जाते हैं उससे लोगों का इन बहसों और समाचारों से मोह भंग होता जा रहा है। यही कारण है कि समाचार चैनलों को अब अपने प्रोग्राम में कुछ अन्य तरह के कार्यक्रम जैसे क्राइम समाचार, ज्योतिष, स्वास्थ्य या अन्य को जोड़ना पड़ रहा है। यह कोई हमारे देश की चिंता या यथार्थ नहीं है अपितु अधिकांश देशों में यही हो रहा है।

रॉयटर्स इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार ब्राजील में 54 प्रतिशत तो अमेरिका में 42 प्रतिशत लोगों ने चैनलों पर न्यूज देखना ही छोड़ दिया है। इंग्लैण्ड में 46 प्रतिशत लोगों ने तो आस्ट्रेलिया में 41 प्रतिशत, फांस में 36 प्रतिशत, स्पेन में 35 प्रतिशत, जर्मनी में 29 प्रतिशत और जापान में 14 प्रतिशत लोगों ने समाचार देखना ही बंद कर दिया है। दरअसल इसके पीछे जो कारण है वह टीआरपी के चक्कर में समाचारों की मनमानी तरीके और बेहद सनसनी बनाकर प्रस्तुत करना है। लोगों को समाचारों से उब भी इसलिए हो गई है कि जो समाचार सीधे-सपाट तरीके से दिखाया जा सकता है उसे जलेबी की तरह फैला दिया जाता है और अंत में समाचारों का रायता इस तरह से फैल जाता है कि उसे समेटना मुश्किल हो जाता है। समाचारों पर केन्द्रित बहस कार्यक्रमों में तो एक-दूसरे को नीचा दिखाना ही स्तर रह गया है। समाचारों के प्रति जिस तरह से लोगों का रुझान कम हो रहा है इसे लेकर चैनलों को भी समय रहते सोचना होगा।

हमारे देश की बात करें तो हमें अधिक नहीं कुछ दशक पहले ही जाना होगा, टीवी आने से पहले के दिन याद कीजिए पुरानी पीढ़ी के लोग उस समय के समाचार बुलेटिन की अहमियत समझते थे और राष्ट्रीय समाचारों के लिए रेडियों पर सुबह आठ बजे और रात पौने नौ बजे के समाचारों का बेसब्री से इंतजार करते थे। घड़ी का भी समय समाचारों से मिलाया जाता था तो समाचारों की विश्वसनीयता भी थी। इसी तरह से लोकल समाचारों के भी समय तय थे और उनका इंतजार रहता था। उस जमाने में पान की दुकानों पर भी लोग समाचार सुनने के लिए एकत्रित हो जाते थे। रेडियों पर सुने गए समाचारों पर लोगों को विश्वास रहता था। अविश्वास का तो प्रश्न ही नहीं। उस जमाने के समाचार वाचक किसी डिग्निटी से कम नहीं माने जाते थे। इसके बाद दूरदर्शन के शुरुआती दौर में भी समाचार बुलेटिनों का अपना महत्व रहा। जब शुरुआत में निजी समाचार कार्यक्रम आज तक शुरु हुआ तो लोगों में क्रेज रहा। वैसे देखा जाए तो टीवी चैनल्स के समाचारों के प्रति लोगों की विश्वसनीयता अधिक होनी चाहिए क्योंकि इसमें विजुअल भी होते हैं पर टीआरपी के चक्कर में जिस तरह से समाचार प्रस्तुत होने लगे उससे लोगों का रुझान अपने आप कम होने लगा है।

विशेषज्ञों की माने तो न्यूज की मनमानी प्रस्तुति और सनसनीखेज प्रस्तुतिकरण से लोगों का मोहभंग होने लगा है। एक अन्य कारण समाचार चैनलों पर गिरता बहस का स्तर है। राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि एक दूसरे पर व्यक्तिगत छींटाकसी के स्तर पर आ जाते हैं और तर्क के स्थान पर कुतर्क के कारण लोग अब इन बहसों से दूर होने लगे हैं। यह सही है कि बहस में अपना पक्ष रखा जाना चाहिए पर अपने पक्ष के स्थान पर तू-तू मैं-मैं के स्तर पर आना और चैनल पर जोर जोर से बोलते हुए सब्जी मण्डी का दृश्य बना देना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। नहीं तो देखा जाए तो बहस के माध्यम से अपना पक्ष रखने और अपनी बात कहने का अच्छा प्लेटफार्म मिलता है पर हो इसके उलट ही रहा है। कई बार तो ऐसा लगने लगता है कि प्रस्तोता ही किसी विचारधारा विशेष के प्रमोटर लगते हैं और यही कारण है कि बहस का स्तर स्तर नहीं रह पाता है।

अब समय आ गया है जब समाचार चैनलों को अपनी भूमिका नए सिरे से तय करनी होगी। कभी रेडियो जिस तरह से आम आदमी के दिलोदिमाग में रच-बस गया था वैसी इमेज समाचार चैनलों को बनानी होगी। बहसों में भी प्रवक्ताओं को पूरी तैयारी के साथ आना होगा और दूसरे पर कटाक्ष के स्थान पर अपना पक्ष या चर्चा के विषय पर सार्थक बहस करनी होगी तो समाचार चैनल अपने अस्तित्व को बचाए रख सकेंगे। कारण साफ है अच्छी प्रस्तुति को लोग देखना पसंद करते हैं और टीआरपी अपने आप बढ़ती है। सनसनी से आप कुछ समय के लिए तो टीआरपी बढ़ा सकते हैं पर अपनी पहचार खो देते हैं। मीडिया विशेषज्ञों को भी इस दिशा में सोचना और प्रयास करना होगा।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

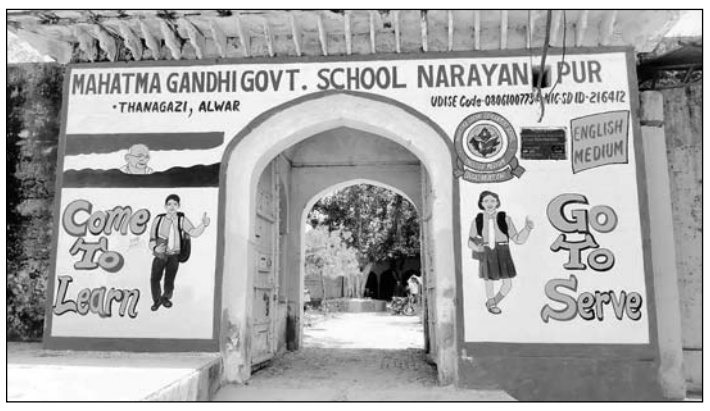

नारायणपुर में बालिका स्कूल से रूपांतरित हुई इंग्लिश मीडियम स्कूल।

हिन्दी मीडियम गर्ल्स स्कूल को अंग्रेजी मीडियम बनाने पर रोष

नारायणपुर, (निसं)। राज्य सरकार द्वारा कस्बे में स्थित बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय व मुण्डावरा में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय को महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम में रूपांतरित किये जाने पर ग्रामीणों ने अब इन स्कूलों का विरोध करना शुरू कर दिया है। ग्रामीणों ने बताया कि उपखंड क्षेत्र में एक ही बालिका सीनियर सैकण्डरी स्कूल है जिसमें करीब 374 छात्रा अध्ययनरत हैं। इसको सरकार ने कक्षा 1 से 8 तक इंग्लिश मीडियम स्कूल में रूपांतरित कर दिया है। इससे बालिका पढ़ने के लिए कहा जायेंगी इसकी चिंता उन्हें सताने लग गई है।

दरअसल इस बार उपखंड क्षेत्र में 10वीं और 12वीं में सरकारी और निजी स्कूलों में लड़कों के मुकाबले 4 बेटियों ने सर्वाधिक अंक प्राप्त करके नारायणपुर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इधर ग्राम पंचायत मुण्डावरा में भी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में करीब 650 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जिसको भी महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल में मर्ज कर दिया गया है, जबकि उनमें से अधिकांश छात्रा है और करीब 7 किलोमीटर की दूरी में कोई सीनियर स्कूल नहीं है, जिसमें दो संकाय संचालित हैं। इसको लेकर ग्राम पंचायत सरपंच और ग्रामीणों ने सीनियर स्कूल को एकीकरण से मुक्त करने के लिए उद्योग मंत्री शकुंतला रावत को पत्र दिया है। इधर पूर्व मंत्री डॉ. रोहिताश शर्मा ने बताया कि सरकार द्वारा जो विद्यालय मर्ज किए गए वो गलत हैं और सरकार द्वारा क्षेत्र की बालिका और हिंदी मीडियम के विद्यार्थियों के भविष्य से खिलवाड़ किया जा रहा है। इसे हम कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे और अगर सरकार द्वारा शीघ्र नारायणपुर बालिका व मुंडावरा स्कूल को एकीकरण से मुक्त नहीं किया तो आंदोलन किया जायेगा।

दबंगों से परेशान परिवार ने एसपी ऑफिस पर धरना दिया

एक महीने पहले भी परिवार कलेक्ट्रेट में भूख हड़ताल में बैठा था

धरने पर बैठे पीड़ित परिवार से पुलिस प्रशासन ने समझाइश की।

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिले के नदबई थाना क्षेत्र का एक परिवार दबंगों से परेशान होकर एसपी ऑफिस पर धरना दिया। पीड़ित परिवार ने दबंगों का विरोध किया तो दबंगों ने पीड़ित परिवार से मारपीट कर दी। इन्साफ के लिए परिवार अधिकारियों के चक्कर काट-काट कर परेशान हैं। एक महीने पहले भी परिवार कलेक्ट्रेट में भूख हड़ताल में बैठा था। जिस पर पुलिस प्रशासन ने आश्वाशन दिया की जल्द ही दबंगों के खिलाफ कार्रवाई कर दी जाएगी लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं जिससे नाराज पीड़ित एसपी ऑफिस के सामने अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ गया।

ऊंच गांव के रहने वाले पूरन ने बताया कि उनका गांव में एक प्लॉट है। जिसकी पैमाइश करवा दी गई है, लेकिन हेतराम ने उनके प्लॉट पर पट्टियां गाढ़ कर अतिक्रमण कर लिया है। जब अतिक्रमण का विरोध किया गया तो दबंगों ने पीड़ित परिवार की पिटाई कर डाली। जिसकी शिकायत नदबई थाने में दर्ज करवाई लेकिन आरोपी खुले में घूम रहे हैं और पीड़ित परिवार को धमकियां दे रहे हैं, लेकिन पुलिस आरोपियों को गिरफ्तार नहीं कर रही।

आरोपी लगातार मुक़दमे में राजीनामे का दबाव बना रहे हैं। जिससे परेशान होकर पीड़ित परिवार एक महीने पहले कलेक्ट्रेट पर भूख हड़ताल पर बैठ गया। लेकिन पुलिस प्रशासन ने आश्वाशन दिया की जल्द ही कोई न कोई कार्रवाई की जाएगी। लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई जिसके बाद आज फिर से पीड़ित परिवार एसपी ऑफिस के सामने धरने पर बैठ गया।

प्रसिद्ध धार्मिक स्थल नईनाथ धाम में लव-कुश वाटिका बनेगी

नईनाथ धाम को पर्यटन स्थल का जल्द दर्जा दिलाने के लिए बस्सी विधायक प्रयासरत

बस्सी, (निसं)। पर्यावरण संरक्षण के प्रति शिक्षित एवं जागरूक करने व बच्चों, बड़ों एवं आमजन में वनानुभाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रदेश की गहलोत सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में 2-2 करोड रुपए की लागत से लव-कुश वाटिकाओं का निर्माण किया जा रहा है।

इसी तरह जयपुर जिले के बस्सी विधानसभा क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल नईनाथ धाम में भी लव-कुश वाटिका का निर्माण किया जाएगा। क्षेत्रीय वन अधिकारी पृथ्वीराज मीणा ने बताया कि इन वाटिकाओं में वहां के स्थानीय वातावरण एवं पारिस्थितिकी के अनुकूल स्थानीय वनस्पतियां, छायादार फल-फूल एवं औषधीय पौधे लगाए जाएंगे ताकि लोगों को वनानुभव मिल सके। इसके साथ ही लोगों को प्रकृति का अहसास हो सके, इसके लिये इन वाटिकाओं के निर्माण में भी प्राकृतिक सामग्री का उपयोग किया जाएगा।

वहीं बस्सी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान गणेश नारायण शर्मा ने बताया कि बस्सी में लव-कुश वाटिका का निर्माण इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि नईनाथ धाम जयपुर जिले समेत आस पास के जिले के लोगों की धार्मिक आस्था का केंद्र है। इसके साथ ही यहां के लोग भी नईनाथ धाम को पर्यटन स्थल के रूप में देखना चाहते हैं। इसके लिए बस्सी विधायक लक्ष्मण मीणा ने ही सरकार से आग्रह किया था और उनके आग्रह पर ही बस्सी के नईनाथ धाम में लव कुश वाटिका का निर्माण किया जाएगा ताकि आगे सही समय पर पर्यटन स्थल के सभी मापदण्ड पूरे होने के बाद नईनाथ धाम को पर्यटन स्थल के रूप में दर्जा मिल सके।

इसके साथ ही शर्मा ने बताया कि फिलहाल नईनाथ धाम को पर्यटन स्थल का दर्जा नहीं मिला हुआ लेकिन फिर भी इस धार्मिक स्थल पर पर्यटकों की भीड रहती है और लगातार यहां लोगों की आस्था बढती जा रही है। साथ ही 17 लाख रुपए की लागत से नईनाथ मंदिर से 1 किलोमीटर पहले गणेश जी मोड पर 21 फीट उंचाई एवं साढे 35 फीट चौडाई का मुख्य प्रवेश द्वार बनाया जाएगा जिसमें एक गेट से प्रवेश तो दूसरे गेट से निकास होगा। इसके अलावा 50 लाख रुपए की लागत से यहां पर पार्किंग, सुलभ शौचालय एवं पानी की भी उचित व्यवस्था की जायेगी ताकि आने वाले समय में नईनाथ धाम को पर्यटन स्थल का दर्जा मिल सके।

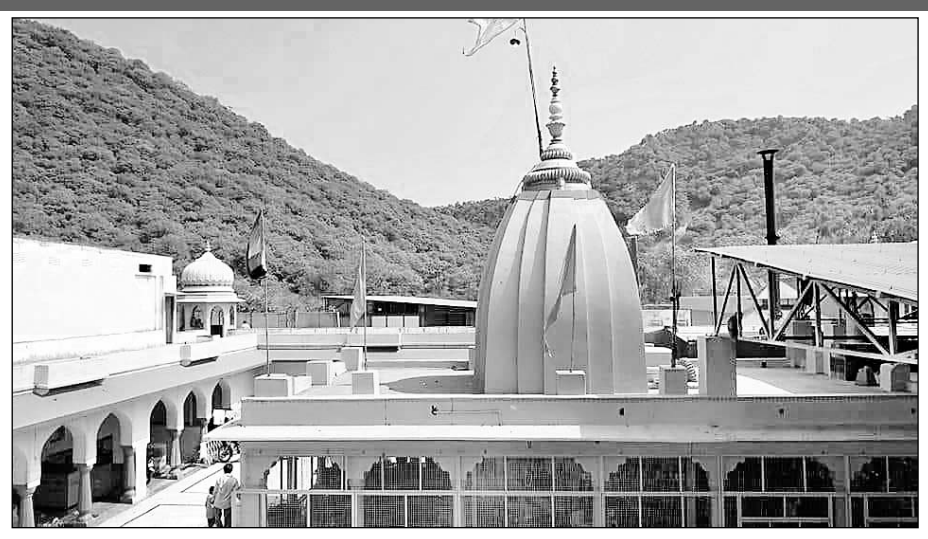

जयपुर जिले के बस्सी क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल नईनाथ धाम।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 25 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, भरणी नक्षत्र दिन 10:24 तक, धृति योग रविवार प्रातः 5:53 तक, कौलव करण दिन 12:11 तक, चन्द्रमा सांय 5:02 पर वृष राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

त्रिपुष्कर योग दिन 10:24 से रात्रि 1:10 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 7:21 से 9:04 तक, चर 12:29 से 2:12 तक, लाभ-अमृत 7:21 से 5:37 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:20

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिव कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिव स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालने का प्रयास करे। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बना रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। मन का भय समाप्त होगा।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। मन खिन्न रहेगा। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मकर
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।